# विषय – सूची


| क्र. | विषय | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| 1. | ग्रामीण मुर्गीपालन : पारंपरिक पद्धति | 01 |
| 2. | शारीरिक संरचना | 05 |
| 3. | मुर्गी आवास की व्यवस्था | 06 |
| 4. | देशी मुर्गी का आहार | 10 |
| 5. | देशी पालन हेतु मुर्गियों का चयन | 13 |
| 6. | अण्डा सेने वाली मुर्गी की देखभाल | 15 |
| 7. | अण्डों की कैण्डलिंग (भ्रूण परीक्षण) | 17 |
| 8. | मुर्गी चूजों की देखभाल | 20 |
| 9. | मुर्गियों में कृमि नाशक औषधियों का उपयोग | 23 |
| 10. | मुर्गियों में बाह्य परजीवी नाशक औषधी का उपयोग | 25 |
| 11. | मुर्गी रोग एवं टीकाकरण | 26 |
| 12. | मुर्गियों की अन्य बीमारियां एवं उपचार | 34 |
| 13. | मुर्गियों की नस्लें | 35 |



संकलनकर्ता:–

डॉ. वाय.एन. शुक्ला, डॉ. के.के. श्रीवास्तव, डॉ. मेरी. बी. जॉन,
डॉ. आर. सी. रामटेके, डॉ. उपासना साहू, डॉ. अंजू शर्मा,
डॉ नीतू गौरड़िया, डॉ. गौतम राय, डॉ. सुनीता राय,
डॉ. एम.पी. सरसींहा एवं डॉ. निशा जैन

सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र महासमुन्द–493445
संचालनालय, पशु चिकित्सा सेवायें प्रांगण, जी. ई. रोड रायपुर–492001
दूरभाष : 0771–2424961, फैक्स 0771–2424961



(राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के सौजन्य से)

# 1. ग्रामीण मुर्गीपालन : पारंपरिक पद्धति

छत्तीसगढ़ प्रदेश के ग्रामीण, खासकर अदिवासी समुदाय के लोग, पारंपरिक पद्धति से कुक्कुट पालन करते हैं। राज्य में आदिवासियों की जनसंख्या लगभग 30 प्रतिशत है। यहां सदियों से पायी जाने वाली मुर्गी नस्लों में प्रमुख हैं– असील याकूत, चित्ता, पीला एवं देसी आदि। आदिवासियों की संस्कृति एवं जीवन शैली में मुर्गियों का एक विशिष्ट स्थान होता है।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि अधिकांश गरीब परिवार मुर्गी पालन पर आंशिक निर्भरता रखते हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि प्रदेश की कुल 81 लाख कुक्कुट संख्या में लगभग 30 प्रतिशत की संख्या देशी घरेलू मुर्गियों की है। आमतौर पर प्रत्येक अदिवासी परिवार में 5–10 मुर्गियाँ पाली जाती हैं। देसी मुर्गियाँ वर्ष में 3 बार ही अंडे देती हैं। इस प्रकार प्रत्येक बार 10–12 अण्डे देने पर वर्ष में उनका औसत उत्पादन कुल 30–35 अण्डे का माना जा सकता है।

इस उत्पादन का 10–15 प्रतिशत हिस्सा अण्डे के रूप में खाने के उपयोग में लाया जाता है तथा 85–90 प्रतिशत हिस्सा चूजे उत्पन्न कर उन्हें मांस के लिये पाला जाता है। देशी मुर्गी का वृद्धि दर अत्यंत धीमी होती है, परन्तु फिर भी प्रदेश में देशी मुर्गियों की संख्या अधिक होने के कारण, प्रदेश का 20 प्रतिशत अण्डा उत्पादन एवं 40 प्रतिशत मांस देशी मुर्गियों द्वारा प्राप्त किया जाता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अप्रत्यक्ष रूप से यह आदिवासी गरीब परिवारों के लिए नियमित आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

ग्रामीण परिवार बिना लागत एवं बहुत कम देखरेख कर अपने घरों की बाड़ी में कुक्कुट पालन करते हैं। फलस्वरूप, कुक्कुट पक्षियों का प्रमुख आहार घरेलू बचा–खुचा खाद्य पदार्थ, कीड़े–मकोड़े एवं जैविक खाद्य अवशेष होता है। इस तरह से स्थानीय अनुपोगी वस्तुओं को देसी मुर्गियाँ अण्डे एवं मांस में बदलने का काम करती हैं। इससे इन कुक्कुटों के माँस का स्वाद अच्छा एवं अधिक गुणात्मक होने से इनका बाजार मूल्य अधिक होता है। इन्हीं धनात्मक गुणों के कारण मांसाहारी समुदाय में देशी कुक्कुट की स्वीकार्यता बढ़ी है। धार्मिक मान्यता एवं पारंपरिक प्राथमिकताओं के कारण स्थानीय आदिवासी अधिकतर रंगीन देसी मुर्गी पालते हैं। रंगीन मुर्गी परिवेश में रंगों की अनुकूलता के कारण शिकारी जानवरों एवं परभक्षी पक्षियों का शिकार होने से बच जाती है।

## कुक्कुट पालन से ग्रामीणों को लाभ

- अतिरिक्त आय।
- आकस्मिक आवश्यकता पड़ने पर कुक्कुट विक्रय करके धन की उपलब्धता।
- पारिवारिक स्वास्थ्य एवं पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका।
- मनोरंजन, जैसे मुर्गा लड़ाई।
- देवी देवता पूजन में चढ़ावा।
- मेहमानों की खातिरदारी, विशेषकर शादी या त्योहार पर।

देशी कुक्कुट कई बीमारी एवं बदलते मौसम की मार का जड़ता से सामना करती है। साथ ही विदेशी मुर्गियों के विपरित देसी मुर्गी एक अच्छी माँ होती है, जो अपने अंडों को सेती है एवं चूजों को अपने साथ लिये घूमती है तथा उनके लिए भोजन जुटाती है। देसी मुर्गी के उपरोक्त सभी गुण आदिवासी जीवन शैली के लिए बहुत उपयुक्त होने के कारण दोनों का सदियों का साथ रहा है।

## घरेलू कुक्कुट पालन से जुड़ी समस्यायें

भारत के ग्रामीण परिवेश में महिलाओं का पशुपालन गतिविधियों में 74 प्रतिशत योगदान रहता है। छत्तीसगढ़ में संभवतः यह अधिक है लेकिन जागरूकता के अभाव में कुक्कुट विक्रय एवं उसकी आय से आदिवासी महिलायें प्रायः वंचित रहती हैं। वर्तमान में क्षेत्रीय अशिक्षा एवं जागरूकता के अभाव में कुक्कुट में मृत्यु दर अधिक होती है।

इतना निश्चित है कि घरेलू मुर्गियाँ घूम–घूम कर जितना भी आहार जुटाएं, वह उनके अण्डा अथवा माँस उत्पादन हेतु पर्याप्त नहीं होता। यही कारण है कि घरेलू मुगियों के वजन में बढ़ोत्तरी फार्म मुर्गियों की उपेक्षा कम होती है। देसी मुर्गियों में एक किलो वजन प्राप्त करने में लगभग 6 माह का समय लग जाता है। चूजों को ठंड, बरसात, कई प्रकार की बीमारियों, चील–कौओं, कुत्ते, भेड़िये आदि से सुरक्षित न रख पाने के कारण ग्रामीण परिवेश में, चूजों में मृत्यु दर बहुत अधिक पाई जाती है।

प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालक किन मुर्गियों को प्रजनन के लिये उपयोग करेंगे एवं किसे बेंचेगे इसका चयन ठीक से नहीं कर पाते जिससे कई बार अच्छी कुडुक मुर्गी या ज्यादा अंडे देने योग्य मुर्गियों को बेचा या खाया जाता है एवं अयोग्य मुर्गी चूजे उत्पन्न करने के लिये रख ली जाती है।

इसी तरह अंडे सेने वाली मुर्गियों हेतु पृथक से व्यवस्था नहीं की जाती, जिससे कुछ भ्रूण–रहित अण्डों से चूजे उत्पन्न नहीं हो पाते। व्यवसायिक मानसिकता नगण्य होने के कारण ग्रामीण मुर्गीपालक अपनी मुर्गियों पर लगभग कोई खर्च नहीं करते और न ही उससे हुए लाभ का कोई हिसाब रखते हैं। चूजे, दाना, स्वास्थ्य सेवाओं की निरंतर अनुपलब्धता, प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों की कमी एवं स्थाई बाजार के अभाव के कारण स्थानीय आदिवासी अभी भी मुर्गी पालन को एक व्यवसाय के रूप में आत्मसात नहीं कर पाये हैं।

देसी मुर्गी पालन से बस्तर एवं सरगुजा जैसे वनांचलों में जैव विविधता का संरक्षण एवं संवर्धन किया जाना संभव हो सकता है। यह एक ऐसे विकास का पथ है, जो जन साधारण की स्वाभाविक रूचि एवं अर्थिक उन्नति के साथ पर्यावरण परिपूरक भी है।

## प्रदेश में कुक्कुट पालन विस्तार–क्षमता आंकलन

1. प्रदेश में आदिवासी ग्रामीण महिलाओं को विगत वर्षों में स्वसहायता समूह के रूप में संगठित एवं प्रशिक्षित करने का अभियान वृहद स्तर पर चलाया गया है। इन महिला समूहों के पास आयवर्धक कार्य करने के लिए बहुत ही सीमित साधन हैं, जिनमें घरेलू कुक्कुट पालन प्रमुख है। कुक्कुट पालन इनका पारिवारिक आय का स्त्रोत भी है।
2. खुली पद्धति से पाली जाने वाली देशी मुगियों की बाजार में अच्छी माँग एवं विक्रय दर है।
3. पशुपालन विभाग से प्रशिक्षित गौसेवक, बस्तर एकीकृत पशुधन विकास परियोजना, जगदलपुर द्वारा प्रशिक्षित ग्राम सहयोगकर्ता, राष्ट्रीय सम विकास योजनांतर्गत प्रशिक्षित पैरावेट गौसेवक आधारभूत पशु चिकित्सा सेवायें(कुक्कुट स्वास्थ्य सेवायें भी) सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र महासमुन्द, कुक्कुट पालन से संबंधित सेवायें प्रदाय करते हैं। इनकी सेवायें सस्ती दर पर घर पहुंच, निरंतर एवं स्थानीय स्तर पर होने के कारण प्रदेश में घरेलू कुक्कुट पालन के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व संभावना ने जन्म लिया है।
4. स्वास्य विभाग की मितानिनें, ग्रामीण स्तर पर स्वास्थ्य कार्यकर्ता होने के साथ–साथ कुशल विस्तार कार्यकर्ता भी हैं। इन्हें कुक्कुट–पालन के क्षेत्र में प्रशिक्षित कर विस्तार कार्यक्रमों में सहभागी बनाया जा सकता है।

# 2. शारीरिक संरचना

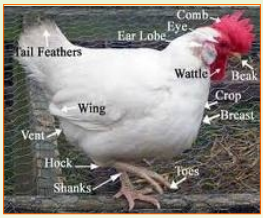


| ब्रायलर | लेयर | देसी |
|---|---|---|
| | | |
| 1. अधिक शारीरिक वृद्धि दर<br>2. एक से डेढ़ माह में लगभग 1.5 किलो वजन।<br>3. मांस के लिये पाला जाता है।<br>4. ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम।<br>5. सफेद रंग के होते हैं।<br>6. 24 घंटे मुर्गी घर में रखकर दाना–पानी वहीं उपलब्ध कराया जाता है।<br>7. बाजार कीमत रू. 80 से 90 प्रति किलो जीवित वजन। | 1. अधिक अण्डोत्पादन एवं कम शारीरिक वृद्धि दर।<br>2. लगभग 300 से 325 अंडे प्रति मुर्गीद प्रति वर्ष<br>3. अण्डों के लिये पाला जाता है।<br>4. ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम।<br>5. सफेद एवं रंगीन दोनों पाये जाते हैं।<br>6. मुर्गी घर में 24 घंटे रखकर एवं पूरा दाना–पानी वहीं उपलब्ध कराया जाता है।<br>7. बाजार कीमत रू. 2 से 3 प्रति अंडा एवं कम अण्डोत्पादन उपरानत मुर्गी कीमत रू. 35 से 45 प्रति नग। | 1. कम अंडोत्पादन एवं कम शारीरिक वृद्धि दर।<br>2. लगभग 30 से 40 अंडे प्रतिवर्ष तथा 6 से 8 माह में एक किलो शरीर भार।<br>3. मांस एवं अंडों के लिये पाला जाता है। अधिक पौष्टिक एवं स्वादिष्ट मांस की मान्यता।<br>4. ग्रामीण परिवेश में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक।<br>5. अधिकतर रंगीन होते हैं।<br>6. आंगन एवं घर के आस–पास खुले स्थान में पाली जाती है। अपना दाना–पानी स्वय जुटाती है।<br>7. बाजार कीमत – रू. 4 से 5 प्रति अंडा एवं 120 से 130 प्रति किलो जीवित वजन। |

# 3. मुर्गी आवास की व्यवस्था

बस्तर के प्रायः सभी परिवारों के पास कुछ मुर्गियाँ होती हैं। एक मुर्गी वर्ष भर में 30–40 अण्डें देती है। कुछ अण्डों में भ्रूण नहीं होता, लेकिन बाकी के करीब 20–22 अंडों से चूजे निकलते हैं। यद्यपि कोई व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया गया है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इन 20–22 चूजों में से केवल 2–3 पक्षी मिलती है। अनुमान है कि इनमें से लगभग 20 से 40 प्रतिशत बीमारी से, 20 प्रतिशत शिकारी जन्तु तथा खो जाने कारण तथा 20 प्रतिशत समुचित देखभाल के अभाव तथा सर्दी–गर्मी के प्रकोप से मारे जाते हैं।

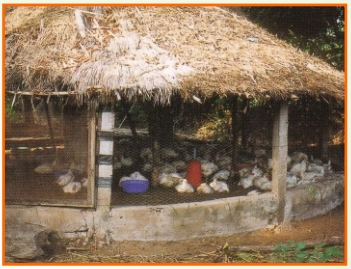

इस अध्याय में मुर्गियों के लिए, साल भर तक इस्तेमाल किये जाने वाली मुर्गी आवास व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना विषय वस्तु है। उचित आवास व्यवस्था कराने से निम्नलिखित फायदे प्राप्त किये जा सकते हैं।

1. अच्छा मुर्गी आवास ठंड, बरसात, तेज धूप एवं जंगली जानवरों से बचाता है।
2. आवास के होने से मुर्गियों को दना–पानी देना तथा दवा पिलाना आसान होता है।

## मुर्गीघर बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. मुर्गीघर अपने आवास के साथ लगा हुआ एवं स्थानीय सामग्रियों (चित्र अनुसार) से बनाया जा सकता है। जहां तक हो सके, घर को पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर बनाएं।
2. यदि संभव हो तो मुर्गीघर को इकट्ठे हुए पानी, बाढ़ आदि से बचाने हेतु घर के फर्श को जमीन से करीब 1 फुट ऊंचा बनाएं ताकि बीट आदि नीचे इकट्ठा हो जाए जिसे बाद में खाद के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. मुर्गीघर बहुत मंहगा नहीं होना चाहिए, परन्तु घर की मजबूती, आराम तथा सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

4. लकड़ी अथवा बांस या मिट्टी का फर्श समतल करके बनाया जा सकता है।

5. घर का फर्श ऐसा होना चाहिए कि नमी तथा दरार पड़ने से बचा रहे, आसानी से साफ किया जा सके, मजबूत हो तथा चूहों इत्यादि का प्रवेश न होने पाए।

6. चूंकि हमारे प्रदेश में प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है, घर की छत ऐसी होनी चाहिए कि बारिश का पानी बहकर निकल जाए। छत दिवार से लगभग 3 फीट बाहर तक निकली होनी चाहिए। गांवों में आसानी से उपलब्ध पैरा का इस्तेमाल छत बनाने के लिए किया जा सकता है। पैरा से ढंकी छत में से पानी चूने की गंजाइश नहीं रहती।

7. मुर्गी–घर के आसपास पेड़ लगाएं ताकि पेड़ों की छाया उस पर पड़ती रहे।

8. दीवारों का लगभग 75 प्रतिशत हिस्से को बांस की जाली बनाकर ढकें। जालीदार दीवार में मोटा बोरा का पर्दा लगाएं जिसे सामान्यतः गोल घुमाकर ऊपर बांध कर रखें। आवश्यकतानुसार बारिश या तेज धूप पड़ने पर उसे खोल कर नीचे लटका दें ताकि मुर्गियां पानी तथा गर्मी से बची रहें। इन बोरों को अधिक गर्मी के दिनों में पानी डालकर ठंडा रखें।

विभिन्न श्रेणी की मुर्गियों हेतु जगह की आवश्यकता (तकरीबन) निम्नानुसार है–

| श्रेणी | आवश्यक जगह (वर्ग फीट प्रति मुर्गी) |
|---|---|
| छोटे चूजे | 0.5 |
| 2–6 हफ्ते | 0.75 |
| 6 हफ्ते से अधिक | 1.00 |
| ब्रायलर | 1.00 |
| लेयर/बड़े मुर्गी | 1.50–2.00 |

## दाना – पानी के बर्तन

1. मुर्गियों के दाने तथा पानी के बर्तनों हेतु समुचित जगह उपलब्ध करवाना अत्यन्त आवश्यक है। सामान्यतः दाने–पानी के बर्तनों हेतु इतनी जगह उपलब्ध होनी चाहिए कि कुल संख्या की आधी मुर्गियां एक समय में खा–पी सकें।

2. पानी के लिये चित्र में दर्शाये गये थोड़े मंहगे बर्तनों का उपयोग किया जाता है। ग्रामीण पशुपालक चाहें तो इन्हें खरीद कर उपयोग कर सकते है।

3. ग्रामीण मुर्गीपालक बांस के बने बर्तनों को कुक्कुट दाना पानी हेतु उपयोग कर सकते हैं। गांव में बांस आसानी से तथा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है तथा इसका उपयोग भी आसान, सस्ता एवं कम मेहनत लगने वाला होता है।

4. तीन या चार फीट लंबे मोटे बांस को बीच से चीरा लगाकर दो हिस्सा कर लकड़ी के खूंटे पर रखा जाता है। इन बर्तनों को समय–समय पर साबुन तथा गुनगुने पानी से धोने तथा सुखाने के बाद पुनः उपयोग करते हैं। दाने को व्यर्थ जाने से बचाने हेतु बर्तनों में दाना आधे से अधिक नहीं भरना चाहिए।

5. पानी के लिए बांस बर्तन के अतिरिक्त चित्र अनुसार घरेलू अनुपयोगी वस्तुओं का भी उपयोग किया जा सकता है।

6. सही जगह पर दाना–पानी के बर्तनों को रखकर मुर्गियों के लिए समुचित जगह उपलब्ध कराना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मुर्गियों को घर के बाहर भी दाने–पानी की व्यवस्था की जा सकती है।

## मुर्गी घर में रूस्ट

रात में मुर्गियों को ऊंची जगह पर उड़ कर पैरों से पेड़ आदि की डाल पकड़ कर सोने की आदत होती है। मुर्गी घर में ऐसी सुविधा न होने पर मुर्गियां दाना–पानी बर्तन आदि के ऊपर बैठती है एवं उनके बीट से गंदगी फैलती है। मुर्गी घर में एक ऐसी व्यवस्था (जिसे रूस्ट कहते हैं) रखने पर मुर्गियां यहां–वहां न बैठकर निर्धारित जगह में ही रहेंगी। इसके लिये उनके घर में ही लगभग 5 से. मी. व्यास का बांस जमीन से करीब 1 मीटर की ऊँचाई पर लगाना चाहिए। 12 पक्षियों के लिए बांसों की कुल लम्बाई 3–4 मीटर के बीच होना चाहिए।

## अण्डे सेने हेतु व्यवस्था

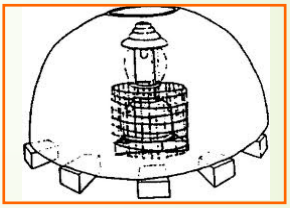

अंडें सेने वाली मुर्गियों हेतु अलग से व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए बांस की बनी टोकनी का उपयोग समुचित संख्या में करना चाहिए ताकि अंडों को टूट–फूट से बचाया जा सके। लगभग 1 वर्ग फीट तथा 6–9 इंच गहराई की एक टोकनी 5 मुर्गियों के लिए पर्याप्त है। इस टोकनी में पैरा बिछाने से अंडे नहीं फूटेंगे।

# 4. देसी मुर्गी का आहार

मुर्गी की तुलना एक मशीन या फैक्ट्री से की जा सकती है, जो ग्रामीण परिवेश में उपलब्ध जैविक अनुपयोगी पदार्थो को पौष्टिक प्रोटिन (अंडा या मांस) में बदल देती है। देसी मुर्गी घर के आस पास उपलब्ध चारे एवं कीड़े मकोड़ों को बड़ी चतुरता एवं चपलता से हासिल करती है। इस वजह से उनकी ऊर्जा खपत होती है। जिससे उनकी बढ़त कम होती है। यदि ग्रामीण पशुपालक सुबह एवं शाम को अल्प मात्रा में कुक्कुट दाना नियमित रूप से दे तों उनकी मुर्गियों को 1 किलो शरीर भार पहुंचाने में कम समय लगेगा एवं पशुपालक अधिक लाभान्वित होंगे। साथ ही उक्त कुक्कुट दाने में गांव में उपलब्ध कम खर्चीली पौष्टिक सामग्री मिलान से कुक्कुट दाने का व्यय भी कम किया जा सकता है।

निम्नलिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं–

1. पानी सबसे सस्ता एवं आहार का प्रमुख पदार्थ होता है। जीवित मुर्गी में 55–60 प्रतिशत पानी ही होता है। दाने को नरम करने व पचाने, हजम हुए भोजन को खून में ले जाने, शरीर के अंदर से खराब तत्वों को बाहर निकालने और शरीर का तापमान बनाये रखने के लिये मुर्गियों को पानी की आवश्यकता होती है। मुर्गी घर एवं आंगन के पास बांस बर्तनों (बांस बर्तन संबंधित जानकारी इस पुस्तक में उपलब्ध हैं) या किसी भी साफ बर्तन में स्वच्छ, ताजे पानी को 24 घंटे सुगमता से उपलब्ध कराना अति आवश्यक है।

2. नियमित कृमिनाशक दवापान तथा बाह्य परजीवी नाशक का उपयोग करना चाहिए।

3. मुर्गियों को नियमित हरा चारा एवं स्थानीय उपलब्ध आहार प्रदान करने से उनकी बढ़त केवल स्वयं द्वारा चरने से ज्यादा तेजी से हो सकती है जिससे ग्रामीण पशुपालक लाभान्वित हो सकते है।

उपरोक्त उपाय अपनाने से देसी मुर्गियों में रोग भी कम लगते हैं। स्वस्थ्य मुर्गी में भोजन का उपयोग रोगों से लड़ने के लिये न होकर अण्डा व मांस बनने के लिए होने लगता है।

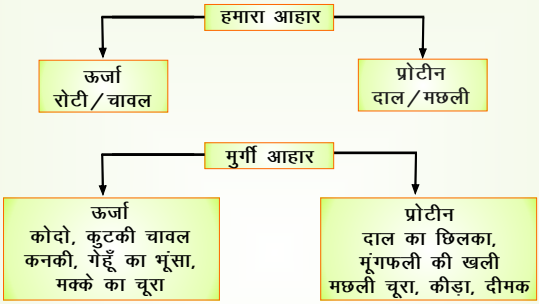


## कुक्कुट आहार के घटकों का संक्षिप्त विवरण एवं उनका महत्व

| क्र. | घटक | शरीर के भीतर कार्य | स्त्रोत |
|---|---|---|---|
| 1. | पानी | पाचन, शरीर के तापमान को बनाए रखना, शरीर में खुराक को ले जाना, शरीर से अनावश्यक तत्वों को निकालना। | पानी, ताजा हरा चारा |
| 2. | कार्बोहाइड्रेट | ऊष्मा, ऊर्जा तथा उत्पादकता के लिये। | पीली मक्का, जौ, ज्वार, राइस पॉलिश, कनकी |
| 3. | प्रोटीन | बढ़ोत्तरी, ऊतक निर्माण, अण्डा एवं मांस उत्पादन | मूंगफली, तिल व सोयाबीन की खली, दाल का छिलका, मछली का चूरा, हरा चारा (बरसीम) |
| 4. | खनिज | हड्डी निर्माण, अण्डा उत्पादन, शरीर के सभी तंत्रों के लिये। | हड्डी का चूरा, नमक, चूना सीप /संगमरमरका चूरा, |
| 5. | विटामिन | सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए तथा बेहतर अण्डा व मांस उत्पादन के लिये। | हरा चारा, पीली मक्का, मछली का चूरा, धूप। |

## हरा चारा

हरा चारा प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन का अच्छा स्त्रोत है, जो हर आयु वर्ग की मुर्गियों को दिया जाना चाहिए। यह मुर्गियों के स्वास्थ्य व अंडा उत्पादन के लिए बहुत उपयोगी है। यदि पत्तेदार हरा चारा फूल आने से पहले काटकर मुर्गियों को दिया जाये तो उन्हें प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन भरपूर मात्रा में मिलते है। हरे चारे में बरसीम एवं लोबिया सर्वोत्तम माने जाते है। इसके अलावा गोभी, गाजर, मूली आदि के पत्ते, पालक जैसी सब्जियों के अनुपयोगी पत्तों के हिस्से भी दिये जा सकते है। मुर्गी आहार में एजोला भी दिया जा सकता है। हरे चारे को साफ पानी से धोकर एवं काटकर देना चाहिए। हरा चारा को निम्नलिखित मात्रा अनुसार खिलाना चाहिए।

मुर्गी – 30 से 50 ग्राम प्रतिदिन
चूजा – 20 से 30 ग्राम प्रतिदिन

## मुर्गी आहार के लिये दीमकों का उपयोग

- पुराने सूती कपड़े के टुकड़े / बोरे का टुकड़ा
- गोबर के सूखे कंडे एवं थोड़ा कच्चा गोबर
- लकड़ी के सूखे टुकड़े
- दीमक युक्त, दीमक बाम्बी का टुकड़ा
- पर्याप्त नमी
- 2–3 दिनों तक मटके को उलटकर, आस पास में पानी छिड़कर रखते है।

मटके को पलटकर, दीमक चूजों को खिलाया जा सकता है। इससे उन्हें अच्छा प्रोटीन मिलता है। जिससे अच्छी बढ़त होती है।

# 5. मुर्गी पालन हेतु मुर्गियों का चयन

ग्रामीण परिवेश में पशुपालक मुर्गियों को एक से डेढ़ किलो के वजन होने पर कुछ को बेचते हैं, कुछ को खाने एवं मेहमानों को खिलाने, एवं शेष को चूजे उत्पन्न करने के लिए (प्रजनन के लिये) उपयोग करते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालक किन मुर्गियों को प्रजनन के लिये उपयोग करेंगे एवं किन्हें बेचेंगे, का चयन ठीक से नहीं कर पाते हैं, जिससे कई बार कुडुक मुर्गी या ज्यादा अण्डे देने योग्य मुर्गियों को बेचा या खाया जाता है एवं अयोग्य मुर्गी चूजे उत्पन्न करने के लिये रख ली जाती है। इसका प्रतिकूल असर मुर्गी पालन के व्यवसाय पर पड़ता है।

इस पाठ में मुर्गियों के चयन के आधार संबंधी जानकारी दी गई है। प्रजनन हेतु कितने मुर्गे या मुर्गियों को रखना है, निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है।

1. मुर्गी घर की क्षमता – कम जगहों में ज्यादा कुक्कुट रखने पर कई तरह की समस्यायें आ सकती है।
2. खाने के उपयोग अथवा बेचने की क्षमता।
3. पशुपालक की कुक्कुट दाना पानी एवं देखभाल करने की क्षमता।

उपरोक्त आधार पर पशुपालक को यह तय करना चाहिए कि वह कितनी मुर्गियों को बेचेंगे एवं कितनों को प्रजनन हेतु रखेंगे।

## प्रजनन हेतु मुर्गा/मुर्गियों का चयन

1.1 तेजी से बढ़ने वाले, स्वस्थ मुर्गा/मुर्गी चयन योग्य हैं। ऐसे कुक्कुटो की मजबूत चोंच एवं छोटे तथा पैने नाखून होते है। चमकदार लाल कलगी स्वस्थ एवं चुस्त कुक्कुट की निशानी होती है।

1.2 जो मुर्गियां कम उम्र में अण्डोत्पादन प्रारंभ कर देती है, उन्हें एवं उनके चूजों को भविष्य में प्रजनन हेतु चयन करना चाहिए।

1.3 दो वर्ष से अधिक समय तक अण्डे दे रही मुर्गियों को प्रजनन के लिए पुनः उपयोग नहीं करना चाहिए।

1.4 मुर्गियों के अंडे देने के स्थान के दोनों तरफ नुकीली हड्डी होती है। तीन उंगली बराबर फासला अधिक अच्छा माना जाता है।

1.5 उन मुर्गियों का चयन करें जिनका गुदा द्वार साफ, नर्म एवं बड़ो हो।

1.6 कुछ मुर्गे अकेले इधर से उधर भटकते है। प्रजनन हेतु उन मुर्गों का चयन करना, चाहिए, जो प्रजनन योग्य मुर्गियों के पीछे दौड़ती है।

1.7 चयनित प्रजनन योग्य मुर्गों को एक वर्ष के भीतर बदल देना चाहिए। पशुपालक ऐसे नर कुक्कुट को आपस में बदल सकते है।

## 6. अण्डा सेने वाली मुर्गी की देखभाल

देशी मुर्गी एक अच्छी मां होने के कारण हमेशा अपने अंण्डे और चूजों की समुचित देखभाल करती है। कुडुक मुर्गी अंडो या नवजात चूजों के ऊपर पंखों को फैलाकर बैठकर उन्हें अपनी शरीर के तापमान से गर्म रखती है। यह देखा गया है कि कुडुक मुर्गी की देखभाल ग्रामीण पशुपालक नहीं कर पाते हैं। मुर्गी को कहीं भी बैठना पड़ता है एवं इसके कुछ अण्डे खराब होने के साथ–साथ जूँ किलनी आदि से भी वह परेशान रहती है।

निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने से अण्डों की संख्या में बढ़ोत्तरी फलस्वरूप चूजों की संख्या बढ़ाई जा सकती है :–

1. घोंसला/लेइंग नेस्ट, वह स्थान है जो दिये गये चित्र अनुसार बनाना चाहिए। यह एक बांस की टोकरी या लकड़ी के बक्से से बनाया जा सकता है। जो मुर्गी घर के कोनों में, किसी ऊँचे स्थान पर रखा गया हो। घर पर उपलब्ध पुरानी टोकरी, टूटी हंडी का भी उपयोग किया जाता है।
2. घोंसला/लेइंग नेस्ट पर सूखी, मुलायम, साफ पैरा/घास का बिछौना बिछाया जा सकता है, जहां कुडुक मुर्गी बैठ सके।
3. इन मुर्गियों को व उनके घोंसलों (लेइंग नेस्ट) को जूँ, किलनी, पिस्तू आदि बाह्य परजीवी से मुक्त रखना चाहिए (विधि इस पुस्तक में दी गयी है), ताकि बार–बार खुजली से परेशानी न हो व मुर्गी आराम से अण्डे से सकें।
4. एक साफ–सुथरा, आरामदायक घोंसला/नेस्ट बनाने से मुर्गियां कहीं भी अण्डा नहीं देती है। इससे गंदे अण्डों से मुक्ति मिलती है तथा जंगली जानवर/पक्षी अण्डे खा नहीं पाते हैं। साथ ही अण्डों के चटकने टूटने, अण्डे खाने की आदत में कमी तथा अण्डे खराब होने का अन्देशा कम रहता है।
5. अण्डा देने वाली मुर्गी को नियमित (प्रति तीन माह पश्चात) कृमिनाशक दवापान कराना चाहिए।
6. घोंसला/नेस्ट की जगह – मुर्गीयां हमेशा एकांत स्थान पर ही अण्डे देना पसंद करती है, इस कारण घोंसला/नेस्ट हमेशा ऐसे स्थान पर रखें जहां–
   a. एकांत हो (घर के अन्दर या मुर्गी कोठे के कोने में)।
   b. अंधेरा रहे (सीधे सूर्य की रोशनी न पड़ें)।
   c. हवादार हो।
   d. जमीन से कम से कम 2 फीट/1 हाथ की ऊंचाई पर हों।
   e. ठंडा व सूखी जगह हो।
   f. घोंसला/नेस्ट के नजदीक हर समय साफ, पीने का पानी उपलब्ध होना चाहिए तथा उपलब्धता के अनुसार दाना (कोंडा, पत्ती/भाजी, मक्का आदि) रखना चाहिए। ऐसा करने से मुर्गी ज्यादा से ज्यादा समय अण्डा सेने के लिए बैठती है।

# 7. अण्डों की कैण्डलिंग (भ्रूण परीक्षण)

ग्रामीण पारंपरिक मुर्गी–पालन व्यवस्था में मुर्गियों से प्राप्त सभी अण्डे मुर्गियों के नीचे सेने हेतू रख दिए जाते है। इस प्रकार मुर्गी इन अण्डों को, प्राकृतिक विधि से सेने का कार्य करती है, जिससे 21 दिनों पश्चात चूजे उत्पन्न होते हैं।

अण्डे दो प्रकार के होते हैं–शाकाहारी एवं मांसाहारी। शाकाहारी अण्डे मादा पक्षियों द्वारा नर की अनुपस्थिति में दिए जाते हैं, अतः इनमें भ्रूण (बच्चा) नहीं होता । मादा पक्षियों को नर से प्रजनन कराने के बाद मांसाहारी अण्डे प्राप्त होते हैं जिसमें भ्रूण उपस्थित रहता है। इस प्रकार के अण्डों से, मुर्गी के नीचे 21 दिनों तक रखने के पश्चात् चूजे निकलते हैं।

मुर्गी द्वारा सेने हेतु अण्डों को मुर्गियों के नीचे रखने से पहले भ्रूण परीक्षण करने वाली मशीन को कैन्डलर कहते हैं। साधरणतः यह टिन का बेलनाकार डब्बा होता है, जिसके एक सिरे पर बल्ब लगा होता है तथा दूसरे सिरे पर एक छेद होता है। जमीन पर अंधेरे कमरे में कैन्डलर के बल्ब को जलाकर, दूसरे सिरे पर अण्डा रखा जाता है। ध्यान से देखने पर यदि अण्डे के चौड़े सिरे की ओर, अण्डे के भीतर, कालापन लिए एक छोटा गोला तैरता हुआ दिखाई दे, तो वह भ्रूण–रहित अर्थात शाकाहारी होगा।

यह परीक्षण कार्य मुर्गी के अण्डा सेने से चौथे–पांचवें दिन पर करना चाहिए, जब भ्रूण इतना विकसित हो जाता है कि देखने पर पहचानना आसान होता है। यदि अण्डे में भ्रूण न हो तो उसे स्वयं के खाने अथवा बेचने में उपयोग किया जा सकता है।

कैण्डलर के स्वरूप में ग्रामीण परिस्थिति को देखते हुए सुविधा एवं उपलब्ध संसाधन अनुसार बदलाव कर कैण्डलर बनाया जा सकता है।

## डब्बा कैण्डलर

1. ग्रामीण परिवारों में प्रायः प्रत्येक घर में टिन का डब्बा आसानी से उपलब्ध रहता है। एक साधारण टिन के डब्बे को लेकर असमें छैनी–हथौड़ी की सहायता से डब्बे की गोलाई के मध्य में एक लगभग 3 से.मी.व्यास का गोला काटें।
2. डब्बे के निचले सिरे पर बल्ब के होल्डर जितने साईज का गोला काटकर उसमें होल्डर फिट करें तथा बिजली कनेक्शन से जोड़ते हुए बल्ब जलाएं।
3. इस डब्बे को जमीन पर रखने के लिए एक स्टैंड भी बनाया जा सकता है। अथवा डब्बे को ऐसे ही रखा जा सकता हैं।

1. बिजली की अनुपलब्धता होने की स्थिति में एक बार में 10–15 तक अण्डों का भ्रूण–परीक्षण करने हेतु टॉर्च का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।
2. इस हेतु साधारण पाउडर या टिन का लंबा सा डब्बा ले लें तथा नीचे की पेंदी निकालकर ऊपरी सतह पर एक छेद कर दें तथा टार्च को जला कर डब्बे के अन्दर रख दें।
3. कार्डबोर्ड (गत्ता) को गोलाई में मोड़कर टॉर्च के आकार का बना लें। कार्डबोर्ड का एक ढक्कन बना कर उसमें ऊपरी सिरे पर अण्डा परीक्षण हेतु एक छेद बनायें।
4. अब टॉर्च को कार्डबोर्ड या पाउडर या टिन के डब्बे के अन्दर जलाकर रखें तथा ऊपर से छेद वाले ढक्कन को लगाकर टॉर्च की रोशनी में अण्डों का भ्रूण परीक्षण करें।
5. किसी भी कैंडलर का नियमित उपयोग से पहले, पद्धति का अच्छा अभ्यास कर लेना अति आवश्यक है।

**कैण्डलिंग से लाभ –**

कैण्डलिंग से भ्रूण रहित अण्डे, जिन्हें अन्यथा कुडुक मुर्गी के नीचे सेने हेतू रख दिया जाता है, को अलग कर खाने अथवा बेचने में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार अण्डों को बर्बाद होने से तो बचाया ही जा सकता है तथा इसे अतिरिक्त आय का साधन भी बनाया जा सकता है। साथ ही सीमित अंडे होने के कारण कुडुक मुर्गी के शरीर का तापमान सभी अण्डों पर समान रूप से पड़ता है एवं अण्डे से चूजे निकलने का अनुपात (हैचिंग प्रतिशत) अधिका होता है।

## 8. मुर्गी चूजों की देखभाल

सामान्यतः चूजों के पालन में ग्रामीण पशुपालकों को सबसे ज्यादा कठिनाई आती है। चूजों में मृत्यु की आशंका सबसे अधिक होती है। चूजों को तेज गर्मी, ठंड, बरसात, कई प्रकार की बीमारियों, चील–कौओं से सुरक्षित रखना अति आवश्यक है। चूजों को प्रथम 3–4 सप्ताह की उम्र तक पालने में निम्नानुसार सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1. दूरस्थ जगह से चूजे क्रय करके लाने की वजह से उनमें भूख एवं थकान होती है। उन्हें सबसे पहले किसी छांव एवं शान्त सी जगह में रखकर बारीक जोन्दरा (मक्का) अथवा दलिया कागज़ (पुराने अखबार/समाचार पत्र) के बिछौने पर छिड़ककर देना चाहिए। चूजें जब कागज के ऊपर चलते हैं तो पंखे की खड़खड़ाहट से वे नीचे पड़े दाने को खोजकर खा पाते है। चूजों की थकान मिटाने के लिए पानी में थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिए। इससे उन्हें ऊर्जा प्राप्त होती है।
2. कुक्कुट फार्म/हैचरी से चूजे आने से पहले मुर्गी घर को चूने या गोबर से लीपना चाहिए। सबसे अच्छा यह है कि जिस मुर्गी घर में नये चूजे आए उसमें अन्य मुर्गियों का प्रवेश रोकना चाहिए। लेकिन जब घरेलू मुर्गी के चूजों को पालने की बात हो तो ऐसा कराना उचित नहीं है।

3. चूजों को हमेशा खुले में नहीं रखना चाहिए। इस पुस्तक में वर्णित मनुष्यों के घर के अहाते में, मुर्गी घर में, या रात के समय एवं दोपहर को आंगन में बड़ी टोकनी के नीचे ढंक कर रखना चाहिए। टोकनी की चौड़ाई 27 इंच ऊंचाई 18 इंच एवं ऊपर एक 8 इंच चौड़ा छेद होना चाहिए।
4. मुर्गी घर एवं उपरोक्त अनुसार टोकनी में दाना–पानी की पर्याप्त व्यवस्था रखनी चाहिए।
5. मुर्गी घर में प्रथम दो सप्ताह तक दिन एवं रात दोनों समय बल्ब जलाकर चूजों को ठंड से बचाना चाहिए। दो सप्ताह के बाद केवल रात में बल्ब जलाना ही पर्याप्त है। रात में बल्ब जलाने से एक लाभ और होता है कि रात में रोशनी होने के कारण वे रात में भी दाना–पानी लेते रहते हैं। जिससे उनकी बढ़त तेजी से होती है। मुर्गी फार्मों के चूजों के जल्दी बढ़ाने के कई कारणों में से यह भी एक है।
6. बिजली न होने पर सिगड़ी अथवा तगाड़ी में कोयले के अंगार या लकड़ी के गुटके के अंगार रखकर उसे ईंटों का घेरा बनवाकर चूजों को सुरक्षित एवं अनुकूल तापमान में रखा जा सकता है।
7. बल्ब कितनी ऊंचाई पर हो या सिगड़ी कितनी दूरी पर रहे इस बात को निम्नानुसार परखा जा सकता है। यदि चूजों बल्ब या सिगड़ी के बहुत पास–पास इकट्ठे हो रहें हों तो इसका अर्थ होगा कि बल्ब को थोड़ा नीचे, चूजों के पास रखा जायें या सिगड़ी में अंगार बढ़ाया जायें। यदि मुर्गी चूजे बल्ब या सिगड़ी से बहुत दूर हट रहें हो तो इसका अर्थ होगा कि बल्ब को थोड़ा ऊपर, चूजों से दूर रखा जाए या सिगड़ी में अंगार घटाया जायें।

8. प्रथम सप्ताह की उम्र में चूजों को झुमरी रोग (रानीखेत) से बचाव के लिए एफ 1 टीका लगाना चाहिए। एक माह की उम्र होने पर यह टीका पुनः लगाना उचित है। टीका लगाने की विधि विस्तार में इस पुस्तक में दी गई है।
9. प्रत्येक माह में 3 दिन एक चम्मच टैट्रासाइक्लीन पाउडर एक कसेला /एक बड़े गिलास पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। यह मात्रा 15–20 चूजों के लिए पर्याप्त होती है। ऐसा करने से चूजों को सफेद दस्त एवं सर्दी जुकाम से बचाया जा सकता है।

10. इसी तरह माह में एक बार सभी चूजों को 3–3 बूंद पिपराजीन दवा, ड्रापर या सिरिंज की मदद से, पिलाने से चूजों के पेट में कृमि (गेंडरूक/पेट के कीड़े) नहीं होंगे जिससे उनकी बढ़त तेजी से हो सकती है।

**ठंड के मौसम में चूजों की देखभाल :–**

ठंड के मौसम में चूजों को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। चूजों को भूसे अथवा बुरादे की बिछावन तैयार कर रखना चाहिए। मुर्गीघर की खिड़की आदि को बोरे से ढंकना चाहिए। बल्ब को नीचे लटका कर यथासंभव कमरे को गर्म रखना चाहिए। दाने का बर्तन अधिकांशतः भरा रहना चाहिए।

**बरसात के मौसम में चूजों की देखभाल :–**

मुर्गीघर को बरसात में गीला होने से सदैव बचाना चाहिए। बिछावन हमेशा सूखा रहना चाहिए। यदि बिछावन में गीलापन आ जाये तो चूना मिलाकर

## बैकयार्ड कुक्कुट पालन योजना

**योजना का उद्देश्य–** अनुसूचित जनजाति वर्ग के परिवारों के जीवन स्तर में सुधार लाना उनकी आय हेतु अतिरिक्त स्त्रोत उपलब्ध कराना।

**योजना का विवरण–** योजना के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों को 15 दिवसीय 55 उन्नत नस्ल के रंगीन चूजे, कुक्कुट आहार, परिवहन सहित प्रदाय किए जाते हैं।

**पात्र हितग्राही–** अनुसूचित जनजाति वर्ग के हितग्राही।

**इकाई लागत–** रू. 1200 प्रति इकाई (जिसमें रू. 935/– को 55 चूजों की कीमत, 200 रूपये खाद्यान्न एवं रूपये 65/– परिवहन हेतु)

**अनुदान/अंशदान राशि–** योजनान्तर्गत प्रति इकाई 75 प्रतिशत (900/– रूपये) राज्य शासन द्वारा अनुदान दिया जाता है तथा 25 प्रतिशत (300/– रूपये) अंशदान राशि हितग्राही द्वारा जमा कराई जाती है।

**हितग्राही चयन–** पात्र हितग्राहियों को ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत एवं जिला पंचायत के अनुमोदन पश्चात योजना का लाभ दिया जाता है।

# 9. मुर्गियों में कृमि नाशक औषधियों का उपयोग

मुर्गियाँ, आहार एवं गंदे पानी के साथ जमीन की मिट्टी भी खा जाती है मिट्टी में कृमि (गेन्डरूक/पटार) के अण्डे रहते हैं। आहार तथा गंदे पानी के साथ कृमि के अण्डे मुर्गियों के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। कृमि के अण्डे मुर्गियों के शरीर में प्रवेश करने पर पेट में पहुंच कर मुर्गियों में नये कृमि पैदा करते हैं। मुर्गियों के पेट में कृमि तैयार होने पर वह मुर्गियों की आंतो में पहुंचकर आंतों से मुर्गियों का रक्त चूसना प्रारंभ कर देते हैं। इस तरह मुर्गी जो आहार खाती है वह कृमि के द्वारा चूस लिया जाता है। इस तरह कृमि के द्वारा आहार का एक बड़ा हिस्सा उपयोग में लेने के कारण मुर्गी अस्वस्थ हो जाती है तथा अण्डे देना बंद कर देती है और कमजोरी के कारण दूसरी बीमारियों से प्रभावित हो जाती है।

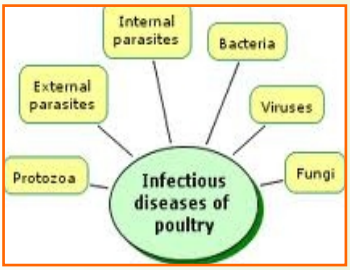


अतः मुर्गियों में कृमियों का नियन्त्रण एवं उपचार अत्यन्त आवश्यक है। इस उपचार में मुख्यतः कृमि का नियंत्रण करना ही है, जिसके लिए मुर्गियों को प्रत्येक माह में एक बार कृमिनाशक औषधि देना अत्यन्त आवश्यक है। जिसके लिए निम्नलिखित कार्यवाही करना चाहिए।

1. मुर्गियों को प्रत्येक माह कृमिनाशक – पिपराजीन औषधि देना चाहिए।
2. प्रत्येक माह में एक तिथि निश्चित कर लेना चाहिए।
3. मुर्गियों की संख्या के अनुसार औषधि की खुराक निर्धारित कर लेना चाहिए।
4. कृमिनाशक औषधि देने के कम से कम 4 घंटे पूर्व से मुर्गियों को दाना – पानी नहीं देना चाहिए जिससे मुर्गियों का पेट खाली रहे तथा वह प्यासी रहें।

5. कृमिनाशक औषधि हमेशा प्रातःकाल में ही देना चाहिए।
6. कृमिनाशक औषधि इतने पानी में ही देना चाहिए जितना मुर्गियां पूरी तरह पी जायें।
7. जिस दिन कृमिनाशक औषधियां मुर्गियों को दी जाएं, उसके दूसरे दिन प्रातः मुर्गी घर का बिछौना (लीटर) अच्छी तरह उलट–पुलट देना चाहिए, जिससे मुर्गियों के पेट से निकली कृमि लिटर में दबकर मर जायें और कृमि पुनः न खा सकें।
8. कृमिनाशक औषधि देने के बाद मुर्गियों को पानी में विटामिन युक्त औषधि देना चाहिए।

इस तरह कृमियों पर नियंत्रण कर मुर्गियों से पूरा–पूरा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

## 10. मुर्गियों मे बाह्य परजीवी नाशक औषधियों का उपयोग

मुर्गियों में जूं, किलनी, पिस्सू आदि बाह्य परजीवियों का प्रकोप हो जाता है। बाह्य परजीवी मुर्गियों के त्वचा, पंख एवं पैरों पर रहकर उनके शरीर से खून चूसते हैं जिससे मुर्गियां कमजोर हो जाती है। साथ ही परजीवियों के प्रकोप से वे बेचैन रहती है एवं ठीक से भोजन नहीं चुग पाती है। मुर्गियां एक दूसरे को चोंच मारकर परजीवियों को चुघने की कोशिश करती है जिससे उन्हें चोट लगने का खतरा भी रहता है।

**बचाव :–** 5 भाग छाना हुआ राख में 1 भाग लिन्डेन या गैमेक्सीन पाउडर को एक कसेला में मिलायें एवं एक–एक कर सभी मुर्गियों को उसका लेप लगायें।

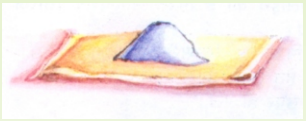

1 भाग गैमेक्सीन पाउडर

4 भाग राख या बालू

गैमेक्सीन पाउडर, राख या बालू के साथ मिलायें
(गैमेक्सीन पाउडर या लिण्डेन पाउडर)

प्रत्येक मुर्गी की त्वचा पर दवा को पंखो/रूओं की विपरीत दिशा में भली प्रकार लगाएं

## 11. मुर्गी रोग एवं टीकाकरण

मुर्गियों में जीवाणु द्वारा उत्पन्न रोगों से 25–100 प्रतिशत तक मृत्यु दर होने की संभावना रहती है। आर्थिक दृष्टिकोण से मुर्गियों के रोगी हो जाने पर इलाज लाभकारी नहीं होता। कुछ बीमारियों से बचाव के लिए पहले से प्रयास करना आवश्यक होता है। अतः मुर्गी पालकों को अपनी मुर्गियों में होने वाले रोगों के लक्षण, रोकथाम, टीकाकरण तथा इलाज के संबध में जानकारी होना चाहिए। घरेलू मुर्गीपालन में आमतौर पर मुर्गियों को निम्नांकित दो बीमारियों से पहचाना चाहिए तथा नियमित टीकाकरण चाहिए–

1. **रानीखेत (झुमरी) रोगः–** यह मुर्गियों की सबसे भयानक व जल्दी फैलने वाली अत्यन्त संक्रामक बीमारी है। इसमें शत्–प्रतिशत चूजे पर मर जाते है। इस

रोग के प्रमुख लक्षण हैं–छींकना, जम्हाई लेना, सांस लेना, सांस लेने में कठिनाई(सांस लेने पर सीटी कसी आवाज आती है), खांसी, बुखार, दस्त (हरा/पीला) आदि। बाद मं टांगों एवं पंखो में लकावा हो जाता है।

**2. चेचक माता रोग(फाउल पाक्स):–** यह एक छूत का रोग है तथा बड़ी मुर्गियों एवं चूजों दोनों में होता है। रोग के कारण मृत्यु तो कम होती है, पर मुर्गियों में अण्डा उत्पादन काफी कम हो जाता है। इसमें त्वचा, ऑख नाक व मुँह में चेचक के दाने निकल आते हैं, शरीर के पंखहीन भागों, जैसे–कलगी, गर्दन, टांग आदि पर मोटी पपड़ी बन जाती है, ऑखों पर सूजन आ जाती है। मुर्गियों बार–बार छींकती है व तेज बुखार चढ़ता है। कई बार अन्य मुर्गी को चोंच मार–मार कर घायल कर देती है।

**टीकाकरण करने के पूर्व क्या करें?**

1. हाथों के नाखूनों को अच्छी तरह से काटें।
2. हाथों को कम से कम दो बार साबुन एवं साफ पानी से अच्छी तरह धोयें और बाद में तौलिया से न पीछे बल्कि हाथों को हवा में सुखाएं।
3. उबलते पानी में सिरिंज के विभिन्न भागों को अलग–अलग डालकर 15–20 मिनट उबालें।
4. उबालने के पश्चात् चिमटी की सहायता से सिरिंज को निकालकर, बर्तन में रखें।

**टीका बनाने की विधि :–**

मुर्गियों के उपरोक्त दोनों टीके सूखी हुई, शीशी बंद गोली के रूप में मिलते हैं, जिन्हें टीकाकरण के पूर्व, साथ में उपलब्ध, घोलक में घोलकर बनाया जाता है।

1. टीके तथा घोलक की सील खोलें।

2. लगभग 1 मि.ली. घोलकर सिरिंज में भरकर टीके की शीशी में डालें। टीके की शीशी को हिलाकर टीके को घोलें।
3. घुले हुए टीके को सिरिंज में भरकर वापस घोलक की शीशी में डालें घोलक की शीशी को हिलाकर टीके को पूरे घोलक में मिला लें। अब टीका तैयार है।

**सावधानियाँ :–**

1. टीका घोलने के पश्चात् 2 घंटे के अंदर उपयोग करें नहीं जो टीका खराब हो जाएगा।
2. दो घंटे के बाद शेष बचे टीके को फेंक दें।
3. टीका हमेशा बर्फ में रखकर घोंलें।
4. मुर्गियों में टीका निर्धारित मात्रा/डोज़ से कम नही लगाना चाहिए।

**टीकाकरण सबंधी आवश्यक बातें :–**

1. टीका बाजार से लाने से लेकर उपयोग करने तक इसे थर्मस के अन्दर बर्फ में रखें।
2. टीका खरीदते समय टीके के उपयोग की अंतिम तारीख देखनी चाहिए।
3. टीका लगने से पहले सिरिंज आदि को अच्छी तरह साफ करना चाहिए।
4. टीके को दिए गए निर्देश के अनुसार ठीक प्रकार मिलाना चाहिए।
5. टीके को गर्मी या लू से बचाएं।
6. घोलक को टीका तैयार करने से पूर्व ठंडा करना चाहिए।
7. टीका तैयार कर लेने पर इसे 2 घंटे के अन्दर इस्तेमाल करें वरना असर जाता रहेगा।
8. पुराना टीका फेंक दें। हमेशा नया टीका तैयार करके लगाएं।
9. टीका लगाने के 1 दिन पूर्व से तथा 2–3 दिन बाद तक चजों का विटामिन तथा एंटीबायोटिक पाउडर दें।
10. बीमार मुर्गियों का टीकाकरण न करें।
11. टीका लगाने के साथ–साथ कृमिनाशक दवापान अवश्य कराएं।
12. प्रथम टीकाकरण के 14 से 21 दिन बाद से रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है।

## झुमरी रोग / रानीखेत रोग

यह देशी मुर्गियों का एक प्रमुख रोग है जिससे सबसे ज्यादा नुकसान मुर्गी पालक को होता है। यह एक विषाणु जनित रोग है जिसका इलाज संभव नहीं है, अर्थात् टीकाकरण ही एकमात्र बचने का उपाय है।

रोग के विषाणु अक्सर दूषित जल व दाने तथा बीमार व स्वस्थ्य मुर्गियों के एक दूसरे के संपर्क में आने से फैलते है। इस कारण यह बेहद आवश्यक है कि मुर्गियों में रानीखेत का टीकाकरण नियमित रूप से किया जावे।

## झुमरी बीमारी के मुख्य लक्षण :–

1. सभी मुर्गियों का बीमार होना तथा प्रायः 90 प्रतिशत से ज्यादा बीमार मुर्गियों की मृत्यु होना।
2. सुस्त होना एवं खाना–पीना बंद करना।
3. सिर में सूजन व मुंह से लार गिरना।
4. आधा मुंह खोलकर लम्बी–लम्बी सांस लेना एवं सांस लेने में आवाज आना।
5. मुर्गियों का ऊंघना / झुमरना।
6. हरा / पीला दस्त होना।
7. लकवा मारना–पंख लटक जाना / पांव का अकड़ जाना।
8. गर्दन टेढ़ी होना।

## रानीखेत बीमारी फैलने पर क्या करे। ?

रोग नियंत्रण की दृष्टि से पूरे गांव / पारा को एक खुला देशी मुर्गी फार्म माना जा सकता है। किन्तु ऐसे देशी मुर्गी फार्म में कुछ विशेष ध्यान देने योग्य बातें हैं–

1. मुर्गियों को बाजार में लेकर जाने व बाहरी मुर्गियों(कई बार बीमार) को बाजार से गांव / पारा में लाने पर कोई नियंत्रण नहीं होता है।
2. टीकाकरण प्रतिशत का कम होना, जिसके निम्न कारण हो सकते है–

**(अ)** देशी मुर्गी पूर्णतः खुली पद्धति में पाली जाती है। अक्सर मुर्गियों के पेड़/छत में रहने के कारण मुर्गी पालक अपनी सभी मुर्गियों का टीकाकरण नहीं करा पाते है।

**(ब)** आदिवासियों में जागरूकता की कमी होने के कारण भी टीकाकरण के समय सभी घरों की मुर्गियों का टीकाकरण नहीं हो पाता है।

3. एक त्वरित रोग– ऐसा रोग जिसके फैलने की सूचना पशुपालन विभाग को देना चाहिए:

अतः प्रथम दृष्टि में देशी मुर्गियों मे झुमरी रोग नियंत्रण अत्यन्त कठिन कार्य लग सकता है पर योजनाबद्ध वैज्ञानिक तरीके से यह कार्य बहुत सरलता से किया जा सकता है।

## झुमरी रोग फैलने की सूचना मिलते ही –

1. सर्वप्रथम स्वयं गॉव/पार में जाकर देखें। अक्सर यह देखा गया है कि सफेद दस्त, कोराइजा बीमारी से मृत्यु को भी ग्रामीण मुर्गी पालक झुमरी रोग बता देते है।
2. झुमरी रोग पाये जाने की स्थिति में सभी स्वस्थ्य दिखती मुर्गियों में तुरंत टीकाकरण करना चाहिए।
3. बड़ी मुर्गियों में आर 2 बी टीका लगाना चाहिए।
4. चूजों एवं छोटी मुर्गियों में एफ 1 टीका लगाना चाहिए।
5. सभी बीमार मुर्गियों को अलग रखने की सलाह देना चाहिए। ऐसे मुर्गियों को टैट्रासाइक्लीन पाउडर पानी में मिलाकर पिलाया जा सकता है।
6. टीकाकरण के दौरान सभी मुर्गी पालकों को नियमित टीकाकरण (आर 2 बी टीका) साल में तीन बार करने की सलाह देना चाहिए।

झुमरी रोग को रानीखेत नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि यह बीमारी हमारे देश मे उत्तरांचल प्रदेश की रानीखेत नामक जगह पर पहली बार देखी गयी थी।

## टीकाकरण विधि –

झुमरी अथवा रानीखेत रोगः इसके लिए दो तरह के टीके लगवाने पड़ते है– एफ 1 एवं आर बी टीका।

## एफ 1 / बी 1 / लसोटा –

1. चूजों को यह टीका लगवाना चाहिए।
2. एक शीशी(वायल) टीका द्रव्य से 100 चूजों को टीका लगाया जा सकता है।
3. टीका द्रव्य को बताए अनुसार घोल बनाएं, बर्फ में रखे , एवं 2 घंटे के भीतर खपत कर लें।
4. घोल बनाने के बाद एक या दो बूंद टीकाद्रव्य ऑख या नाक में डाले।

## आर 2 बी / आर.बी / रानीखेत रेग्यूलरन

1. बड़े मुर्गियों को यह टीका लगवाना चाहिए।
2. एक शीशे (वायल) टीका द्रव्य से 100 मुर्गियों को टीका लगाया जा सकता है।
3. टीका द्रव्य को उपरोक्त अनुसार घोल बनायें, बर्फ में रखें एवं 2 घंटे के भीतर खपत कर लें।
4. घोल बनाने के बाद 0.5 एम.एल टीकाद्रव्य इन्जेक्शन द्वारा मांस में लगाएं।
5. अच्छा हो कि यह टीका उन मुर्गियों में लगायें जिन्हें एफ 1 टीका पहले लग चुका हो।
6. चार माह के भीतर पुनः आर 2 बी टीका लगाना चाहिए।

## माता रोग / चेचक / फाउल पाक्स

देशी मुर्गियों में चेचक / माता रोग एक आम व दूसरी प्रमुख बीमारी है। इससे ग्रस्त प्रायः सभी छोटे चूजों की मृत्यु हो जाती है। बड़ी मुर्गियों की मृत्यु तो कम होती है पर स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। चेचक / माता रोग एक विषय जनित रोग होने के कारण इसके इलाज नहीं हो सकता हैं। अर्थात् टीकाकरण ही एकमात्र बचने का उपाय है। चूंकि बीमारी पूरे साल गॉव / पारा की मुर्गियों में बड़े

छोटे/बड़े रूप में होती रहती है, इस कारण बीमारी से बचने के लिए नियमित टीकाकरण (साल में दो बार) करना आवश्यक है।

**लक्षण :–**

चेचक/माता रोग के तीन किस्में/रूप है–
1. त्वचा का चेचक 2. गले का चेचक 3. ऑखों का चेचक

**1. त्वचा का चेचक :–**

यह किस्म/रूप सबसे अधिक देखने को मिलते है। छोटे–छोटे मटमैले छालों की तरह दाने कलगी तथा पंख रहते हिस्सों पर उभर आते है। व जल्दी से बढ़ जाते हैं और पपड़ी बन जाते है। फिर आपस में जुड़ जाते है व चेचक का रूप ले लेते हैं , फैलते–फैलते नाक पर, ऑख पर और चोंच के दोनो किनारों पर भी आ जाते हैं। यह चेचक 3 या 4 सप्ताह तक रहकर झड़ जाते हे। छोटे चूजों की 3–4 सप्ताह भोजन चरने में कठिनाई के कारण मृत्यु हो जाती है।

बड़ी मुर्गियों की मृत्यु तो नहीं होती पर स्वास्थ्य पर बड़ा बुरा असर पड़ता है। तथा वजन व अण्डा उत्पादन में बहुत कमी आ जाता है।

**2. गले का चेचक :–**

चेचक की यह किस्म सबसे ज्यादा नुकसानदेह है। इससे छोटे चूजों व बड़ी मुर्गियां की समान रूप से मृत्यु होती है।

गले वाली चेचक मे मुंह व गले के अन्दर उभरे हुए छाले हो जाते है, जो बड़े होकर और गहरे हो जाते है। जिसके कारण मुर्गिया अच्छी तरह खा नहीं पाती व उनकी हालत जल्दी बिगड़ जाती है व मृत्यु हो जाता है।

**3. आंखों का चेचक :–**

इस किस्म में बीमारी का प्रभाव आंखों में दिखता है। आंखो में पानी आने लगता है जो बाद में गाढ़ा हो जाता है, आखें पीप से भर जाती है और फल आती है। पलक चिपक जाती हैं और मुर्गी देख नहीं पाती । फलस्वरूप भूख से मृत्यु हो

जाती है। यह जानना आवश्यक हे कि एक ही समय में अलग–अलग मुर्गियों में तीनों किस्में देखी जा सकती है।

छालों या फफोलों पर कोई एक अच्छा एन्टीबायोटिक मल्हम लगाकर रोग की तीव्रता को कम किया जा सकता है, लेकिन इस बीमारी का कोई सीधा इलाज संभव नहीं है। रोग न होने से पहले नियमित टीकाकरण ही बचाव का एकमात्र सही एवं सस्ता उपाय है।

## टीकाकरण विधि :–

1. चूजों एवं बड़ी मुर्गियों को यह टीका लगाना चाहिए।
2. एक शीशी (वायल) टीका द्रव्य से 100 चूजों/मुर्गियों को टीका लगाया जा सकता है।
3. टीका द्रव्य को पूर्व में बतायी विधि अनुसार घोल बनाएं, बर्फ मे रखें, एवं 2 घंटे के भीतर खपत कर लें।
4. चेचक टीका का 0.5 एम.एल. टीका द्रव्य इन्जेक्शन द्वारा मांस मे लगाया जाता है।
5. यह टीका साल में दो बार लगवायें।
6. इस रोग के टीकाकरण में, वर्ष में एक रूपया प्रति मुर्गा खर्च आता है।

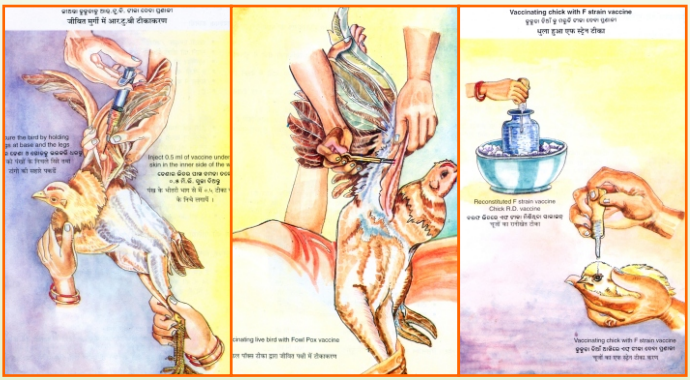

# 12. मुर्गियों की अन्य बीमारियां एवं उपचार

मुर्गियों मे बहुत सारी बीमारियां होती हैं, परंतु अधिकरतर बीमारियां बड़े कुक्कुट फार्मो में देखने को मिलती है। ग्रामीण अंचल की घरेलू देशी मुर्गीयों में वातावरण एवं बीमारियों से बचाव हेतु अंदररूणी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है जिसकी वजह से ये काफी बीमारियों से बच जाती है। लेकिन घरेलू मुर्गियों में पिछले अध्याय में वर्णित झुमरी एवं चेचक प्रमुख बीमारियं मानी जाती है। इसके अतिरिक्त घरेलु देशी मुर्गियों में निम्नलिखित बीमारियां पायी जाती है।

1. सफेद दस्त
2. खूनी पेचिश
3. सर्दी जुकाम

## सफेद दस्त / बैसिलरी व्हाईट डायरिया / पुलोरम बीमारी

यह रोग मुख्यतः चूजों में होता है जिससे काफी अधिक संख्या में चूजों की मृत्यु होती है। बाद में यह बड़ी मुर्गियों में भी फैलता है। रोग से ग्रस्त मुर्गियों के अण्डो में भ्रूण मर जाते है। रोगी मुर्गियों की बीट चूने जैसी सफेद होती है तथा मल विसर्जन के समय दर्द होता है, कुक्ष पक्षी अंधे या लंगड़े भी हो जाते हैं। चूजे एंव मुर्गियों का पिछला भाग दस्त के कारण चिपक जाता है।

### उपचार :–

1. टैट्रासाइक्लीन पाउडर दवा – यह दवा किसी भी पशु दवा दुकान में उपलब्ध रहती है। 20 चूजे अथवा 5 बड़ी मुर्गियों के लिए एक कप पानी (50 एम. एल.) में 2 चुटकी(2 ग्राम) दवा घोंलें एवं ड्रापर या सिरींज द्वारा बीमार चूजों को दो –दो बूंद एवं बड़ी मुर्गियों के पांच–पांच बूंद तीन दिनों तक लगातार पिलाने से बीमारी दूर की जा सकती है। पीने के पानी में घोलकर भी दवा मिलाकर मुर्गी घर में रखे पानी बर्तन में डाल दें एवं प्रभावित चूजे या मुर्गियों का अपनी इच्छा अनुसार इस पानी को पीने दें। ऐसा तीन दिनों तक करें।

2. लिक्सेन पाउडर, यूरासोल पाउडर– इन दवाओं को भसी उपरोक्तानुसार उपयोग किया जाता है।

**रोकथाम :–**

1. बिछौना, मुर्गीघर एवं उसके आसपास की जगह की साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।
2. टैट्रासाइक्लीन पाउडर/लिक्सेन पाउडर/लारासोल पाउडर–ऊपर बतायी गयी दवा को आधी मात्रा में देने पर यह रोकथाम करने में सहायक है।

## खूनी पेचिश/खूनी दस्त/कॉक्सीडियोसिस

यह रोग मुख्यतः पक्षी रखने के स्थान पर नमी के कारण होता है। सबसे प्रमुख लक्षण खूनी दस्त होता है। प्रभावित चूजे खाना नहीं खातें है, पंखों को नीचे झुकाकर रखते है। कलगी का रंग भूरा होने के साथ–साथ, अण्डोत्पादन कम हो जाता है। इस रोग से चूजे काफी कमजोर हो जाते है एवं ऑख मुंदकर बैठ जाते है। इस बीमरी से काफी बड़ी संख्या में पक्षियों की मृत्यु हो जाती है। यह रोग कम आयु के पक्षियों को करीब दो से तीन सप्ताह की आयु में लगता है जो बाद में बड़ी मुर्गियों में भी फैलता हैं।

**उपचार :–**

कॉक्सीडिया रोधक दवायें जैसे एम्प्रोलियम, सल्फाक्वीनॉक्सेलिन, सल्फामीराजीन आदि आसानी से उपलब्ध है। दवा के ऊपर दर्शायी गयी मात्रा के अनुसार दवा को दाने अथवा पानी में मिलाकर सात दिनों तक प्रभावित मुर्गियों को देना चाहिए। साथ ही विटामिन एवं खनिज मिश्रण को पानी में मिलाकर देने से भी रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

**रोकथाम :–**

1. इस रोग की रोकथाम के लिए मुर्गियों का बिछावन या मुर्गी घर फर्श सूखा तथा साफ रखना चाहिए। बिछावन गीला होने पर चूना मिलाकर बिछावन को पलट देना चाहिएं।

2. निम्नलिखित औषधियों मे से किसी एक को दाना में मिलाकर खिलावें या पीने के पानी में मिलकार पिलावें। दवा युक्त पानी के साथ सादा पानी न दें। रोकथाम के लिए 2–3 माह तक या जब तक आवश्यकता हो दवा देना चाहिए।

## मुर्गियों में सर्दी – जुकाम

ठंड के समय, बारिश में भीगने पर या खुले में बाहर रहने पर मुर्गियों को , खासकर चूजों को यह बीमारी हो जाती है। मुर्गियों का सुस्त रहना, कलगी में नीलापन, दाना–पानी कम खाना एवं चोंच से पतला स्त्राव का बहना प्रमुख लक्षण है। चूजे एवं मुर्गियां पास – पास आकर झुंड बना लेते है इससे यह बीमारी और भी फैलती है।

### उपचार :–

टैट्रासाईक्लीन की 1/4 टैबलेट सुबह शाम खिलावें। सल्फाडिमीनन( 16 प्रतिशत घोल) 10 मिली. 1 लीटर पानी में मिलाकर पिलावें।

### रोकथाम :–

1. मुर्गियों को रात में खुला नही छोड़ना चाहिए।
   सस्ता एवं सुलभ मुर्गी घर बनाकर ही मुर्गी पालना चाहिए। अन्य लाभ के अतिरिक्त इस बीमारी की रोकथाम भी इससे की जा सकती है।
2. मुर्गियों के ठंड से बचाना चाहिए। आवश्यकता होने पर 60 या 100 वॉट का बल्ब मुर्गी घर में जलाना चाहिए। इससे कमरा गर्म रहता है।
3. उपरोक्त वर्णित टेट्रासाइक्लीन दवा को इस बीमारी की रोकथाम या तीव्रता का कम करने में उपयोग किया जा सकता है। उक्त दवा मुर्गियों को हर 3 माह में एक बार 3 दिन तक लगातार पिलाना चाहिए।
4. चूजों का रखरखाव शीर्ष में वर्णित तरीके से बल्ब या अंगार भरे कसेले का उपयोग करने से भी इस रोग से बचा जा सकता है।

## प्रमुख बीमारियों के लक्षण

| क्र. | बिमारी | चित्र | प्रमुख लक्षण | बचाव |
|---|---|---|---|---|
| 1. | झुमरी / रानीखेत | | • ऊंघना एवं दस्त<br>• नाक से पानी आना<br>• पैर एवं पंख में लकवा मारना<br>• सांस लेने में कठिनाई<br>• बहुत सारी मुर्गी एक साथ प्रभावित | बीमारी से पहले नियमित टीकाकरण आवास एवं बर्तनों की साफ सफाई बीमार मुर्गी एवं ठंड से बचाव बीमार मुर्गी से दूर रखना |
| 2. | चेचक / पॉक्स | | • कलगी, चेहरा एवं आंखों में फोड़े<br>• फोड़े फूटकर घाव<br>• बहुत सारी मुर्गी एक साथ प्रभावित | |
| 3. | सफेद दस्त | | • ऊँघना<br>• खूनी दस्त<br>• कमजोरी | आवास एवं बर्तनों की साफ–सफाई लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |
| 4. | खूनी दस्त | | • ऊँघना<br>• खूनी दस्त<br>• कमजोरी | आवास एवं बर्तनों की साफ–सफाई लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |
| 5. | कृमि | | • वजन न बढ़ना<br>• कमजोरी<br>• अन्य बीमारी से प्राकृतिक बचाव शक्ति कम होना | प्रति तीन माह कृमि नाशक दवा पिलाना |
| 6. | सर्दी | | • ऊँघना<br>• नाक से पानी आना<br>• सॉस लेने मे कठिनाई<br>• सॉस लेने में घरघराहट<br>• कमजोरी | बीमार मुर्गी एवं ठंड से बचाव लक्षण दिखने पर तुरंत उपचार |

## मुर्गियों की नस्लें

| क्र. | नस्ल | महत्वपूर्ण लक्षण |
|---|---|---|
| 1. | प्लाईमाउथ रॉक | यह अमेरिका में माँस और अण्डों के लिये अत्यधिक प्रचलित है। यह कई एक रंगों में मिलती है जैसे– उजले, पीले, नीले, भूरे इत्यादि। इसके मुर्गे का रंग मुर्गी से हल्का होता है। इस नस्ल का कलंगी, लोलक और हसिया पूँछ रोड आईलैंड रेड और व्हाइट लेगहॉर्न से छोटा होता है। इसके मुर्गे का वज़न 4.25 किलो तथा मुर्गी का वज़न 3.25 किलो होता है। |
| 2. | रोड आईलैंड रेड | ये पक्षी भारी शरीर वाले होते हैं। इनका शरीर लम्बा और आयताकार होता है। यह अण्डा देने और माँस दोनों दृष्टिकोण से उपयोगी नस्ल हैं। इनमें माँस की मात्रा अधिक होती है तथा इनका माँस स्वादिष्ट होता है। यह साधारण लाल होती है। इसका पूरा शरीर पंख से ढँका रहता है। यह बहुत परिश्रमी होती है तथा सभी मौसम गर्मी, सर्दी और बरसात में सभी जगह अच्छी तरह पलती है। यह वर्ष भर में 150–200 अण्डे दे सकती है। इसके मुर्गे का वजन 4 किलो तथा मुर्गी का वजन 3 किलो होता है। |
| 4. | रोड आईलैंड व्हाइट | यह रोड आईलैंड रेड की तरह होती है। इसका रंग ऊजला होता हैं। |
| 5. | न्यूहैम्पशायर | यह रोड आईलैंड रेड की तरह होती है तथा रोड आईलैंड रेड में विकसित हुई है। यह एक कलंगी होती है। इसके मुर्गे का वजन 4 किलो तथा मुर्गी का वजन 3 किलो होता है। |
| 6. | औरपिन्गटन | यह एक कलंगी की होती है। इसका शरीर लम्बा, गहरा एवं गोलाकार होता है। इसकी छाती भरी हुई होती है तथा पीठ चौड़ी होती है। इसके पर अमेरिकन नस्लों की अपेक्षा ढीले होते हैं। यह एक अच्छा भोज्य योग्य पक्षी |

| | | |
|---|---|---|
| | | है। परन्तु इसे अण्डों के लिये भी विकसित किया गया है, ये कई एक रंग के होते है; जैसे उजली, काली, पीली, नीली। इसके मुर्गे का वजन 5 किलो तथा मुर्गी का वजन 3.50 किलो होता है। |
| 7. | कॉर्निश | यह अति उत्तम माँस गुण की होती है। इसकी त्वचा पीली होती है। इसका शरीर माँस वाला होता है और घने परों से भरा होता है। इसकी छाती गहरी और चौड़ी होती है जिससे कन्धे की चौड़ाई अधिक होती है। यह छोटी कलंगी की होती है। यह उजले, लाल–उजले तथा गहरे रंग का होती है। इसके मुर्गे का वजन 3.5–4.5 किलो तथा मुर्गी 2.75 किलो से 3.5 किलो की होती है। |
| 8. | ससेक्स | यह माँस के लिये सर्वोत्तम मानी जाने वाली नस्ल है। देखने में सुन्दर होती है। शरीर प्रारम्भ से अन्त तक भरा होता है। शरीर लम्बा कंधों के पास चौड़ा होता है। सीना विकसित तथा उभरा होता है। एक कलंगी होती है। इस नस्ल की मुर्गियाँ और तीन तरह की होती हैं; जैसे – लाल, चितकबरा और हल्की। इसके मुर्गे का वजन 4 किलो तथा मुर्गी का वजन 3 किलो होता है। |
| 9. | व्हाइट लेगहार्न | यह उजले रंग की होती है। यह एक कलंगी होती है। कलंगी का रंग गुलाबी होता है। इसके कान का लोलक उजला होता है। इसकी चोंच पीली, छाती उभरी हुई, पैर लम्बे तथा सिर छोटा होता है। यह 5–6 माह में अण्डा देने योग्य हो जाती है। यह दाना कम चुगती है परन्तु अण्डे अधिक देती है। यह हमारे देश में बहुत प्रचलित है। दूसरे देशों में कई एक प्रकार की नस्लें इससे तैयार की गई हैं। इसके 2–3 माह के चूजों का माँस खाने में अच्छा होता है। इसके बाद इसका माँस अस्वादिष्ट होने लगता है। इसके मुर्गे का वजन 2.75 किलो तथा मुर्गी का वजन 1.75 किलो होता है। यह वर्ष भर में 200–250 उजले अण्डे देती है। इससे विकसित नस्लों की मुर्गियाँ 250–300 अण्डे देती हैं। |

| | | |
|---|---|---|
| 10. | मिनॉर्का | यह दो रंग की होती है–एक काली और दूसरी उजली। लेकिन उजली बहुत कम ही देखने में आती है। यह धातु रूप काली परों वाली होती है। यह देखने में सुन्दर लगती है। यह अधिक अण्डे देने वाली होती है। इसके अण्डे बड़े आकार के उजले रंग के होते हैं। यह दाना कम खाती है। यह एक कलंगी होती है तथा कलंगी का रंग गुलाबी होती है। इसके चूजे बहुत जल्दी बढ़ते हैं और करीब तीन माह में इसके नर (कॉकरेल) भोज्य योग्य हो जाते हैं। इसके मुर्गे का वजन 3 किलो तथा मुर्गी का वजन 2.75 किलो होता है। इसे कई एक जगहों में रेडफेसेड भी कहा जाता है। |
| 11 | कोचिन | यह भारी आकृति का वजनदार होती है। इसके परों में अत्याधिक पंख होते हैं। इसके पंख लम्बे और काफी होते हैं जिससे यह बहुत बड़ी दिखाई देती है। ये सभी एक कलंगी होते हैं। इसके मुर्गे का वजन 5 किलो तथा मुर्गी का वजन 4 किलो होता है। |
| 12 | असील | इस प्रकार की मुर्गियाँ सही में खेल मनोरंजन की मुर्गी हैं। इसके मुर्गों की लड़ाई देहातों में प्रसिद्ध है जिससे लोग मनोरंजन करते हैं। इसका मांस अच्छा भोज्य योग्य हैं। इसका मांस काफी स्वादिष्ट होता है। यह अण्डे बहुत कम देती है। किन्तु अण्डों पर चिपककर बैठती है। यह घुमते–फिरते अधिक स्वस्थ रहती है। पर, यह घेरों में अच्छी तरह नहीं पलती है। इसके कलंगी छोटे आकार की होती है। चोंच छोटी, सिर छोटा चौड़ा तथा गर्दन लम्बी होती है। इसका शरीर भारी तथा पैर लम्बे होते हैं। इसके शरीर की बनावट गोल होती है। यह देखने में बहुत शोभनीय होती है। यह झगड़ालू प्रकृति की होती है। यह कई एक रंग की होती है; जैसे– उजली, काली, लाल–काली, रंग–बिरंगी इत्यादि। ये वर्ष भर में 30–40 अण्डे देती है। इसके मुर्गे का वजन 2.5–5 किलो तथा मुर्गी का वजन 2.3–5 किलो होता है। |

असील

व्हाईट लेगहॉर्न

कड़कनाथ

कोचिन

पॉलिश

प्लाईमाउथ रॉक